REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

महादेवी वर्मा के साहित्य में स्त्री–विमर्श

श्रीमान् राजकुमार
सहायक प्रोफेसर , वैश्य कॉलेज, भिवानी.

प्रस्तावना :–

महादेवी वर्मा का रचना संसार स्त्री के बहुआयामी व्यक्तित्व के साथ नियन्त्रक एवं उत्प्रेरक की भूमिका से संपन्न है। इन्हें आधुनिक साहित्य की मीरा भी कहा जाता है। अगर मीरा जैसी वेदना उनमें है तो मीरा जैसी विद्रोहिणी भी उनमें विद्यमान है। इन्होंने कविता लिखने के साथ–साथ गद्य में भी रचनाएँ लिखी। महादेवी वर्मा का दृष्टिकोण उदारवादी व नारीवाद से अधिक मेल खाता है। महादेवी वर्मा के समय में स्त्री–विमर्श जैसी कोई धारा न थी पर यह इनकी दूरदृष्टि ही थी जो वर्तमान, समय में भी हमें उनकी रचना से स्त्री–विमर्श की अनुगूंज देखने को मिलती है। महादेवी वर्मा जानी–मानी चित्रकार भी थी, उन्होंने नारीजगत को भारतीय संदर्भ में मुक्ति का संदेश दिया है। मुक्ति के विषय में उनका विचार है कि भारत की स्त्री तो भारत माँ का प्रतीक है।

स्त्री–विमर्श :–

'स्त्री–विमर्श' एक वैश्विक विचारधारा है। 'विमर्श' का अर्थ है – 'जीवन्त–बहस'। भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति अंतर्विरोधों से भरी हुई है। परंपरा से नारी को शक्ति का रुप माना गया है पर आम बोलचाल में उसे 'अबला' कहा जाता है। हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श की जड़ें अत्यंत प्राचीन काल से पाई जाती रही है। पुरुष स्त्री को अपने से नीचे स्तर पर रखना चाहता है वह कहता है कि अगर नारी पढ़ी लिखी है तो मेरे लिए खतरा बन जाएगी। पुरुष के मन में यह भर असुरक्षा की भावना और स्त्री को दबाकर कुचलकर नियन्त्रण में रखने की स्त्री विरोध दृष्टि सदियों से चली आ रही है। स्त्री को केवल घर की चारदीवारी के बीच ही सीमित रखा गया है। पुरुष एवं समाज स्त्री को परदे के अंदर रखना चाहता है। उसे अपने अधिकारों की स्वतंत्रता नहीं है।

सुधा सिंह के अनुसार :–

''स्त्री अस्मिता का प्रमुख आधार है स्त्री को पुरुष संदर्भ से बाहर लाना और स्त्री संदर्भ में रखकर देखना। पितृसतात्मक विचारधारा का विरोध करना उन तमाम तर्कों का निषेध अथवा अस्वीकार जो स्त्री को उसकी स्वतंत्र पहचान से वंचित करते हैं अथवा मातहत बनाते हैं। स्त्री और पुरुष दो अस्मिताएँ हैं।''[1]

भारतीय सन्दर्भ में स्त्री–विमर्श दो विपरीत ध्रुवों पर टिका हुआ है। एक ओर तो परम्परागत भारतीय नारी की छवि है जिसे सीता व सावित्री समझा जाता है तो दूसरी ओर घर परिवार तोड़ने वाली स्वार्थी और कुल्टा समझा जाता है। महादेवी वर्मा की रचनाएँ हैं:– 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'मेरा परिवार', 'संस्मरण', 'दीपशिखा', 'अग्निरेखा', 'नीहार', 'नीरजा', 'श्रृंखला की कड़ियाँ' आदि।

श्रृंखला की कड़ियाँ :–

महादेवी वर्मा ने स्त्री की सामाजिकता से लेकर आर्थिक परंतत्रता का विश्लेषण किया है। इनके समय में स्त्री–विमर्श जैसी कोई धारा न थी। महादेवी वर्मा ने इसमें स्त्री शिक्षा, स्वांतत्र्य, स्वावलंबन, वेश्यावृत्ति, सामाजिक स्थिति व साथ ही स्त्री की राजनीतिक सहभागिता के प्रश्न को भी अपने विश्लेषित मुद्दे के रुप में अपनी इस पुस्तक में उठाया है।

महादेवी वर्मा समाज और धर्म में स्त्रियों की दोयम स्थिति पर भी सवाल खड़े करती है। महादेवी व्यंग्य करती है।

''हमारी पूजा अर्चना की सफलता के लिए यह परम आवश्यक है कि हमारा देवता हमारी वस्तुओं पर हमारा अधिकार रहने दे और केवल वही स्वीकार करें जो हम देना चाहते हैं।''[2]

नारी को भी पुरुष समाज में वही देवत्व दिया है जिसे प्रसाद समझकर गृहण करती रहे यथास्थिति बनी रहे तथा किसी भी वस्तु की मांग न करे।

वेश्यावृत्ति इसी पुरुष सता का परिणाम है जिसमें पुरुष के भोग विलास का माध्यम बनती स्त्री को पुरुष की इच्छा का ग्रास बनना पड़ता है। पतित वेश्याओं पर भी महादेवी वर्मा कहती है।

''जैसे दास प्रथा के युग में स्वामियों के निकट दास व्यक्ति न होकर यन्त्र था, वैसे ही समाज सदा से पतित स्त्रियों को भी समझता है।''[3]

अतीत के चलचित्र :–

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों की यह विशेषता भी है कि उनमें चरित्र–चित्रण का तत्त्व प्रमुख रहा है। सभी रेखाचित्रों को महादेवी वर्मा ने अब जीवन से ही लिया इसीलिए इनमें उनके अपने जीवन की विविध घटनाओं तथा चरित्र के विभिन्न पहलुओं का प्रत्यारोपण अनायास ही हुआ है।

इसमें मारवाड़ी बाल विधवा आदि के कष्टों का चित्रण महादेवी ने किया है। वह उनके दुःख को हमारे परिवेश से जोड़ देता है जिस वय में बालिकाओं को हँसना–बोलना मन को संतृप्त करता है उसी वय में उसे घर की चारदीवारी में कैद होकर अपना जीवन बिताना पड़ता है। दिन–रात काम करके भी उसका समय नहीं गुजरता। उसके साथ मारपीट की जाती है। महादेवी वर्मा द्रवित होकर कहती है।

''क्रूरता का वैसा प्रदर्शन मैंने फिर कभी नहीं देखा बचाने का कोई उपाय न देखकर कदाचित मैंने जोर–जोर से रोना आंरभ किया, परंतु बच तो वह तब सकी, जब मन से ही नहीं शरीर से बेसुध हो गई, परंतु बहुत दिनों के बाद जब मैंने फिर उसे देखा तब उन बचपन भरी आँखों में विषाद का गाढ़ा रंग चढ़ चुका था और वे ओंठ जिन पर किसी दिन हँसी छिपी–सी जान पड़ती थी। ऐसे काँपते थे, मानो भीतर का क्रंदन रोकने के प्रयास से थक गए हों।''[4]

दाम्पत्य जीवन को बिखरने से बचाने के लिए अपने पति की दूसरी स्त्री को नियति के रुप में स्वीकार करके एक स्त्री के त्याग, प्रेम, वात्सल्य, कर्त्तव्यपराणयता आदि की स्थापना करने वालों के रुप में सबिया का रेखाचित्र महादेवी के उन रेखाचित्रों में है जो एक स्त्री के हृदय की विशालता का सूचक है। ''इसमें सबिया का पति दूसरी शादी करके गेंदा नामक स्त्री को ले आता है जिसे स्वीकार कर सबिया से उसी की रेशमी साड़ी माँगे जाने पर वह उसे तुरंत उतारकर देती है। अपनी सास के रोकने पर दूसरी पत्नी को घर में स्थान देती है।''[5]

महादेवी वर्मा कहती है कि गेंदा का उसे घर में रहना सर्वसम्मत हो जाने पर भी सबिया का कष्ट कम नहीं हुआ।

स्मृति की रेखाएँ :–

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों से संबंधित महत्वपूर्ण संग्रह 'स्मृति की रेखाएँ' में संकलित पहले ही रेखाचित्र 'भक्तिन' में महादेवी वर्मा ने 'भक्तिन' के माध्यम से एक ऐसी स्त्री की कथा कही है जो जन्म से ही अपार वेदना, उपेक्षा, अभाव और कष्टों को सहती आई है। महादेवी वर्मा के घर में काम शुरु करने से पहले और महादेवी के साथ जीवन जीते हुए भक्तिन के संदर्भ में उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं और कमजोरियों के संदर्भ में अनेक रोचक पहलुओं से पाठकों को बड़ी ही मार्मिकता और रोचकता के साथ प्रस्तुत करने में महादेवी को सफलता मिली है।

'भक्तिन' के साथ महादेवी का संबंध इतना गहरा था कि वह भक्तिन को अपने व्यक्तित्व और जीवन का जरुरी अंश मानकर उसे खोना नहीं चाहती थी। भक्तिन का चित्र और चरित्र अपनी विविध अर्थछवियों से युक्त है। ग्रामीण संस्कृति और ग्रामीण नारी का प्रतीक भक्तिन के माध्यम से महादेवी वर्मा ने ग्रामीण परिवेश, मान्यताओं, रुढ़ियों, शोषण आदि से संबंधित सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रक्रियाओं एवं पारिवारिक संघर्ष के विविध रुपों का

प्रस्तुतीकरण किया है सारा परिवेश जीवंत हो उठा है। भक्तिन की आकृति को शब्द रुप देते हुए महादेवी वर्मा लिखती हैं :–

''घटी हुई चाँद को मोटी मैली धोती से ढाँके और मानो सब प्रकार की आहट सुनने के लिए एक कान कपड़े से बाहर निकाले हुए भक्तिन जब मेरे यहाँ सेवक धर्म से दीक्षित हुई तब उसके जीवन के चौथे और अंतिम परिच्छेद का जो अर्थ हुआ, उसकी इति अभी दूर है।''[6]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि महादेवी वर्मा का स्त्री–विमर्श स्त्रियों को ज्ञान की परम्परा से जोड़ने का माध्यम है। वे पुरुषों की बराबरी नहीं करती बल्कि शिक्षित होने की सलाह देती हैं ताकि वे अपने परिवर को सुसंस्कृत बना सकें महादेवी वर्मा के साहित्य में हम स्त्री के करुणा, संवेदना आदि के चित्रण को मानवीय धरातल पर देख सकते हैं।

संदर्भ सूची :–

1. सुधा सिंह, ज्ञान का स्त्रीवादी पाठ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2004, पृ0–12.
2. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2008, पृ0–91.
3. वहीं, पृ0–81.
4. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2008, पृ0–29.
5. वहीं, पृ0–43.
6. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखाएँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2014, पृ0–13.